महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर–
को विद्यावाचस्पति हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध की
रूपरेखा

' मध्यकालीन संतों के काव्यों में सामाजिक चेतना का अध्ययन
(कबीर के पूर्ववर्ती एवं परवर्ती संतों के सन्दर्भ में)'

'A Study of Social Awareness in the Poetry of Medieval Saints
(With special reference to Saints Pre and Post Kabir)

शोध निर्देशक
डॉ. हरप्रकाश गौड़
वरिष्ठ व्याख्याता
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

शोधार्थी
अरविन्द सिंह चौहान

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
सत्र–2012

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर – को विद्यावाचस्पति हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

1. शोधार्थी का नाम (हिन्दी में) :– अरविन्द सिंह चौहान

Name of Scholar (In English) :- Arvind singh chouhan

शोध विषय (हिन्दी में) :– 'मध्यकालीन संतों के काव्यों में सामाजिक चेतना का अध्ययन (कबीर के पूर्ववर्ती एवं परवर्ती संतों के सन्दर्भ में)'

Title of the Research Work :- (In English) 'A Study of Social Awareness in the Poetry of Medieval Saints (With special reference to Saints Pre and Post Kabir)

2. शोध कार्य स्थल :—
Location / Department

हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए मैनें राजकीय महाविद्यालय, अजमेर को चुना हैं। मेरे शोध निर्देशक डॉ. हरप्रकाश गौड़ इसी महाविद्यालय में वरिष्ठ व्याख्याता (हिन्दी) पद पर कार्यरत हैं तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से शोध निर्देशक के रूप में पंजीकृत हैं। राजकीय महाविद्यालय अजमेर, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर तथा राजस्थान राज्य सरकार द्वारा पंजीकृत आदर्श महाविद्यालयों की श्रेणी में स्वीकृत हैं। आदर्श महाविद्यालय होने कि स्थिति में, अजमेर संभाग का प्राचीन राजकीय महाविद्यालय होने तथा विस्तृत पुस्तकालय होने के कारण यहा पर शोध–कार्य करने सम्बन्धी सभी प्रकार की आधारभूत सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। अतः इन सभी कारणों से मेरे द्वारा प्रस्तुत महाविद्यालय को शोध–कार्य स्थल हेतु चुना गया हैं।

3. शोध–कार्य का प्रमुख उद्देश्य :—
(Main Objectives Of the research work) : -

प्रस्तुत शोध–कार्य का उद्देश्य यह हैं कि मध्यकालीन विश्वास, लोक संस्कृति एवं सांस्कृतिक परिवेश का वर्तमान परिवेश से परिचय करवाना, साथ ही मध्यकालीन संत साधक–साहित्यकारों द्वारा समाज सुधार तथा ज्ञान प्रसाद की भावना–जिसके माध्यम से इन्होंने अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा कुरीतियों को दूर करके ईश्वरीय सत्य का साक्षात्कार मानव को करवाकर वर्षो– वर्षो से धर्म पर चढी आडम्बर की परत हटाकर, हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिक सौहार्द का वातावरण रचित किया–इसकी जानकारी तथा परिचय पाठक को करवाना।

कबीर की चकाचौंध में कबीर परवर्ती तथा पूर्ववर्ती संत धूमिल हो चुके हैं, उनको साहित्य तथा समाज में कबीर समान उच्च पद दिलवाना। मानव प्रेम का शुद्ध रूप, धर्म का केन्द्र बिन्दु मानव तथा हिन्दू एवं मुस्लिम संस्कृति का समन्वय, सौहार्द रूप निर्माण, वर्तमान समय में उत्पन्न हो रहे धर्म को लेकर मानसिक संकीर्ण वातावरण को तोडने, एक मानवीय धर्म की स्थापना का प्रयास, समरसता तथा संतों की सामाजिक चेतना से परिचय करवाना—इस शोध प्रबन्ध के उद्देश्य हैं।

4. प्रस्तावित शोध—कार्य का महत्व

(Importance Of Proposed Resaerch work) :-

किसी भी साहित्य के महत्व का आकलन दो दृष्टियों से किया जाना चाहिए :—

1. साहित्यिक सौन्दर्य और गरिमा की दृष्टि से।
2. प्रभाव की दृष्टि से।

— जो साहित्य इन दोनों गुणों से परिपूर्ण हो उसे तो सर्वोव्वत्तम साहित्य मानना चाहिए। वह सोने पे सुहागा—कहावत को चरितार्थ करने वाला होता हैं। प्रभाव तथा गरिमा की दृष्टि से संत काव्य का महत्व भक्ति युगीन साहित्य में तुलसी के समकक्ष कहा जा सकता हैं। समाज पर संत साहित्य का जो प्रभाव रहा, वैसा उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ हैं। जनवाणी में अपने अनगढ़ शब्दों में तथा लोकानुभूति के आधार पर समाज सुधार का कार्य करते हुये भक्ति का मार्ग प्रशस्त करने के कारण सन्त कवि सच्चे भक्त, महात्मा और उपदेशक कहलायें।

सन्तों ने अपनी व्यक्तिगत साधना की उच्च भावभूमि को छोडकर समाज की निम्न से निम्न, उच्च से उच्च जाति का कल्याण करने हेतु एक क्रान्तिकारी तथा लोककल्याणकारी आन्दोलन उत्पन्न किया। सन्त कवियों की सबसे बडी क्रान्तिकारी और विशिष्ट उपलब्धि यह रही कि उन्होंनें पूर्व नाथ सिद्धों की भाँति लोकधर्म से पलायन न कर समाज के भीतर रहते हुये, दान भिक्षा त्यागकर जीविका हेतु कठिन साध्य किया और लोकमंगल का कार्य भी किया, उन्होंने स्वयं समाज के सुख—दुःख को भोगते हुए सभी प्रकार के सामाजिक अन्याय का प्रबल प्रतिरोध किया।

सन्त कवियों का व्यक्तित्व सच्चे अर्थों में संवेदनशील था उनका मानस स्वच्छ और उदार था, इसीलिए उनका साहित्य जनभावनाओं की सहज प्रवृतियों, परिस्थितियों, विकृतियों और विडम्बनाओं का एक विशाल शब्द चित्र है। दूसरे शब्दों में, उन्होंने तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण अंकित किया है।

सन्त काव्य आत्मविश्वास, आशावाद और आस्था की भावना स्थापित करने में सहायक रहा, यह जीवन शक्ति का अक्षय स्त्रोत हैं। इस काव्य का मुख्य प्रयोजन यह हैं कि त्रस्त, सन्तप्त, उपेक्षित, उत्पीडित मानव को परिज्ञान प्रदान करना, जिसमें जीवन का स्वरूप, विश्लेषण और व्याख्या उपलब्ध होती हैं। इसमें युगबोध, युगचेतना तथा सामाजिक चेतना का अथाह सागर हैं। इनकी रचनाओं में मानव की क्षुद्रता, सीमाओं तथा स्वार्थ, असत्यप्रियता, संकीर्णता, अर्थ लोलुपता, कामुकता आदि का विवरण एवं विश्लेषण हुआ हैं।

इसी प्रकार सामाजिक असंगतियों, धार्मिक विडम्बनाओं, बहुदेववाद, मूर्तीभंजन आदि समस्याओं की अभिव्यक्ति और उनका निदान भी सन्त काव्य में मिलता हैं। सन्देह नहीं हैं कि सन्त कवि अपने समय के समाज के सच्चे प्रहरी थे। सन्त सत्पथ के वीर आरोही थे। वे सत्य का अनुसरण करते हुये धर्म, परम्परा, शास्त्र, शासक तथा धर्म के ठेकेदारों आदि किसी की भी परवाह नहीं करते थे तथा समाज के सभी वर्गो को सम्मान देते हुये समाज में मानव मात्र की प्रतिष्ठा स्थापित करने का कार्य इन सन्त कवियों के द्वारा बखुबी किया गया।

तत्कालीन परिस्थितियों (बाहरी आक्रमण तथा क्षत्रिय, ब्राह्म्ण वर्ग द्वारा समाज के अन्य वर्ग पर अत्याचार) में, सभी जातियों धर्मो के मध्य भाईचारा पैदा करने के लिए सन्त कवि आगे आये, इन सन्त कवियों में न केवल राजा महाराजा लोग थे अपितु मोची, नाई, कसाई और जुलाऐ भी थे। सभी ने मिलकर ईश्वर की एकता और सर्वव्यापकता को स्थापित किया और मानव–मानव के बीच एकता और सौहार्द को निरूपित किया।

सन्त कवियों की सामाजिक चेतना का एक महत्वपूर्ण उदाहरण उनकी दलित विमर्श चेतना रही, उन्हें जाति–पाति के वे बन्धन जिनमें जकडी जाकर मानवता सिसकियां भर रही थी, बडे ही अप्रिय प्रतित होते थे। अस्तु : उन सब की निन्दा सन्त साहित्य का प्रिय विषय भी रही। यही कारण हैं कि सन्त साहित्य का प्रभाव उन जातियों के मध्य अधिक रहा जो दीर्घकाल से दबी, दलित एवं पिछडी हुई थी और जिन्हें अन्त्यज की संज्ञा भी प्रदान की गई हैं।

सन्तों ने अपनी साधना द्वारा जहां एक ओर व्यक्तिगत जीवन को उन्नत किया वहीं दूसरी ओर लोकजीवन को भी उदात्ता की ओर अग्रसर करने का पुण्य प्रयास किया। अन्त एवं बाह्य दोनों ही रूपो की पवित्रता और कथनी और करनी की एकरूपता सन्तों की जीवनयात्रा का प्रबल संबल थी। यह निर्विवाद है कि सन्तों ने अपने युग की आवश्यकता को समझा और बडी ही निष्ठा के साथ अपनी विमल वाणी के उद्‌घोष द्वारा जनजीवन में एक क्रान्ति उपस्थित की।

धर्मान्धता, रूढियों का अन्धानुकरण, जातिगत भेदभाव, सम्प्रदाय कट्टरता आदि उन समस्त विखण्डनकारी प्रभावों के प्रति उन्होंने विद्रोह किया और उस व्यापक सत्य को, परमतत्व को प्राप्त करने का आग्रह किया जो सभी मानवों हेतु सम था। कविता करना सन्त कवियों का उद्देश्य नही था वरन् काव्य कर्म की अपेक्षा उपदेश इनका प्रधान ध्येय था, इसी हेतु सन्त कवियों ने अपने काव्यों की भाषा आम बोलचाल की भाषा को ही बनाया जिससे वे निम्न से निम्न, शिक्षित से अनपढ तक, समाज के सभी वर्ग तक अपनी वाणी को पहुचा सकते थे। शब्द और उनके प्रयोग, समकालीन वातावरण अनुरूप शब्द भाषा– एक नवीन सामाजिक चेतना का विलक्षण उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

एकेश्वरवाद का नारा, मानव की प्रतिष्ठा, उदात्त गुणों की स्थापना, शुद्ध आचरण और नैतिकता, जीवन मूल्यों, सामाजिकता, सामाजिक असमानता, कुप्रथा विरोध, विश्वव्यापी मानव धर्म की स्थापना के साथ–साथ हिन्दू मुस्लिम भेद को मिटाना तथा प्रेम, सौहार्द, मधुरता, सहिष्णुता, भक्ति और "तन्त्र न जानु, मंत्र न जानु, जानु सुन्दर काया," की स्थापना का आदर्श रूप समाज के समक्ष प्रस्तुत कर समाज को दीर्घकालीन नैतिक पतन से उभारकर उच्चता की ओर, सात्विकता की ओर अग्रसर करने का सराहनीय प्रयास इन संत कवियों ने किया।

सामाजिक स्तर पर इन सन्तों ने पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों का पूर्ण वीरता के साथ खण्डन किया, मिथ्या आडम्बरों के प्रति जैसी अनास्था इन सन्त कवियों ने व्यक्त की : वैसी न तो पहले कोई समाज सुधारक कर सका और न परवर्ती युग में किसी का साहस हो सका। इन सन्तों का एक बडा वर्ग निम्न जाति से सम्बन्धित रहा किन्तु आचरण शुद्धता और सत्य की वाणी का प्रभाव निम्न के साथ साथ उच्च वर्ग पर भी अत्याधिक रहा। सर्वजन सुलभ तथा समन्वयवादिता के कारण ही सन्त विचारों का प्रचार– प्रसार समाज के प्रत्येक स्तर पर हो सका तथा इनकी समाजिक चेतना से तत्कालीन परिस्थितियों का परिवर्तन हुआ।

मन, बुद्धि और आत्मा को समान रूप से रसान्वित कर एक विशेष प्रकार का आशान्वित जीवन इस साहित्य ने निम्न से उच्च तक प्रत्येक जन को प्रदान किया तथा समाज के किसी भी क्षेत्र को इससे अछुता न रखा।

धर्म तथा ईश्वर, भारत तथा भारतीयों हेतु अनिवार्य वस्तु तथा पवित्र आस्था का विषय रहे, प्राचीनकाल धर्म के ठेकेदार वर्ग ने धर्म के नाम पर जाति पाति के पाखण्ड तथा धार्मिक भेदभाव उत्पन्न कर भारतीय समाज को युगों–युगों के लिए पतन के गर्त में धकेल दिया। प्राचीन सामाजिक ढांचे पर सर्वप्रथम भारत तथा हिन्दी साहित्य में मध्यकालीन सन्त काव्यधारा के कवि तथा समाज सुधारकों ने प्रहार किया तथा धर्म के ऊपर चढी इन आडम्बर की परतों को उखाडना प्रारम्भ किया।

समाज ऐसा हैं (यथार्थ) तथा समाज ऐसा होना चाहिए (आदर्श) – की तर्ज पर सन्त काव्यधारा के कवियों ने सन्त हृदय की शील–सम्पन्नता एवं परदुःखकातरता से सभी प्राणियों को अपनी ओर खींचना प्रारम्भ कर दिया। सन्त सदैव स्वयं को महत्वहीन समझते तथा दूसरों को सदा सम्मानित करते – इसी में उन्हें आत्म संतोष का अनुभव होता।

कामादि–विकार रहित, मनसा– वाचा–कर्मना प्रभु पर प्रीति रखने के कारण उन्हें समस्त प्राणियों में परमतत्व की अनुभूति होती। इस हेतु ही 'वह सबका, और सब उसके बन जाते है' सभी में उसी परमतत्व का आभास तथा सबके लोकमंगल की कामना हेतु उनके हृदय में निरन्तर शांत एवं अमृत की धारा प्रवाहित होती रहती हैं।

सन्त शब्द से तात्पर्य अधिकाशंतया यह समझा जाता हैं कि सन्त उस अलौकिक ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए लोकजीवन से दूर हटकर किसी पर्वत की कन्दरा या किसी पावन पयास्विनी के तट पर बैठकर साधना करने में अधिक विश्वास रखते हैं। किन्तु पूर्व मध्यकालीन सन्त सामाजिक प्राणी रहे वें साधारण गृहस्थों की भाँति तथा समाज के मध्य रहकर ही अपनी दैनिकचर्या का सहज रूप से पालन करते हुये सामाजिक समरूपता– समरसता तथा मानव को मानवता का सन्देश सुनाते रहे।

प्रत्येक सन्त ने अपनी साखी– शब्दों–पदो आदि के माध्यम से आत्मचिंतन प्रसूत भावों–विचारो एवं तथ्यों का प्रतिपादन किया, सन्त अपनी आत्मा के स्वर को दूसरों को भी सुनाना चाहते थे क्योंकि उनका विश्वास था कि स्वानुभूति की भूमिका में प्रतिष्ठित होकर उन्होने जो तत्व चिंतन किया वही मानव मात्र हेतु श्रेष्ठ हैं, सन्तों का समाज के प्रति दृष्टिकोण प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी रहा, सन्तों ने मानवता की भावना को आगे बढाया तथा मानवों में आत्मविश्वास, सभी धर्मो का मुल केन्द्र ईश्वर को न बता मानव को सिद्ध किया।

सन्त कवियों ने साहित्य के आदर्श को अपने समकालीन साहित्यकारों के समक्ष रखा, साहित्य (स + हित = सभी का हित) तथा सन्त (सात्विक प्रवृति) दोनों का समान अर्थ रहा। इस दृष्टि से विचार किया जायें तो सन्त साहित्य हिन्दी साहित्य की दीर्घकालीन यात्रा में उच्चपद तथा प्रथम स्थान पर माना जाना चाहिए क्योंकि इसमें स्वान्तसुखाय की अपेक्षा परहितसुखाय तथा सामाजिक चेतना गहरी समाई हुई है। साहित्य समाज का दर्पण हैं इसी उक्ति को सन्त साहित्यकारों ने अपने साहित्य का केन्द्र बिन्दु बनाया। तथा तत्कालीन वातावरण और जनमानस की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु साहित्य का निर्माण किया।

5. साहित्य–समीक्षा

Review of Literature :-

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से पूर्व के इतिहासकारों ने अपने इतिहास–ग्रन्थों में कवि–काव्यधारा का नामोल्लेख मात्र ही किया। आचार्य शुक्ल प्रथम इतिहासकार रहें– जिन्होंने कवि– काव्यधारा तथा कवि–कृतित्व पर विशेष टिप्पणी की। किन्तु सन्त साहित्य तथा सन्त (मध्यकालीन) पूर्व नाथ और सिद्ध साहित्य को शुक्ल ने धार्मिक काव्य की संज्ञा प्रदान कर, उसकी उपेक्षा ही की। जनकल्याणकारी–सामाजिक चेतनावादी काव्य हेतु शुक्ल की लेखनी को ''तुलसी ही प्रिय'' लगा।

साहित्य इतिहास की दीर्घ परम्परा में हजारी प्रसाद द्विवेदी की कलम नें उपेक्षित साहित्य तथा कवि को उचित सम्मान दिया किन्तु हजारी जी की कलम भी 'कबीर' पर आकर ठहर सी जाती हैं', कबीर उपरान्त सन्त साहित्य पर हजारी जी ने विशेष लेखन नहीं किया।

कबीर के चमत्कारिक व्यक्तित्व और उनकी तीव्र विद्रोही शैली की चकाचौंध के कारण– ''हाथी के पैर में सभी के पैर आ जाते हैं'' – कहावत चरितार्थ हो गयी। सन्त साहित्य तथा सामाजिक चेतना की जहाँ बात आई, कबीर का नाम प्रथम व अंतिम रहा।

लोकमंगलकारी काव्य तथा सामाजिक काव्य, यथार्थ और आदर्श का समन्वित रूप सन्त साहित्य, समकालीन लोकजीवन का प्रामाणिक दस्तावेज होता हुआ भी उपेक्षित ही रहा।

राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के हिन्दी विभाग द्वारा निम्न विषय पर कई शोधार्थियों ने शोधग्रन्थ प्रस्तुत किये है–

1. हिन्दी के भक्ति साहित्य में राजस्थानी निम्बार्क सन्त कवियों का योगदान।
   शोध निर्देशक – डॉ. बाबुलाल महावर
   शोधार्थी – ललित कुमार शर्मा

2. हिन्दी सन्त साहित्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन
   शोध निर्देशक – डॉ. धनवन्ती दाधीच
   शोधार्थी – सतपाल सिंह
3. दादू दयाल जी के काव्यों में सांस्कृतिक जीवन
   शोध निर्देशक – डॉ. मंजु सक्सेना
   शोधार्थी – विनोद मील
4. दादू दयाल पंथी मुस्लिम सन्तों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना।
   शोध निर्देशक – डॉ. सुनिता कुलश्रेष्ठ
   शोधार्थी – बरखा बंशल
5. सन्त रविदास के काव्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन।
   शोध निर्देशक – डॉ. लेखचन्द गड़वाल
   शोधार्थी – महेन्द्र कुमार कक्कड़
6. चरणदासी सन्त सहजोबाई और उनका काव्यः एक विवेचन
   शोध निर्देशक – डॉ. प्रेमप्रकाश भट्ट
   शोधार्थी – देवकरण सिंह
7. शेखावटी के सन्त साहित्य पर नामथ सम्प्रदाय का प्रभाव
   शोध निर्देशक– डॉ. रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ
   शोधार्थी – बनवारी लाल
8. सिद्धनाथ एवं प्रमुख हिन्दी सन्त
   शोध निर्देशक– डॉ. राधेश्याम जांगिड़
   शोधार्थी – प्रमिला झीबा

प्रस्तुत शोध प्रबन्धों का विश्लेषण एवं साहित्य समीक्षा करते हुये यह निष्कर्ष निकाला गया कि सन्त काव्य धारा के कवियों के काव्य में सामाजिक चेतना पूर्णरूपेण भरी थी। प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य होने के उपरान्त भी शोध रिक्तता उपस्थित है इसी कारण तथा भावनाधार पर "मध्यकालीन सन्तों के काव्यों में सामाजिक चेतना का अध्ययन (कबीर के पूर्ववर्ती एवं परवर्ती संतों के सन्दर्भ में) शीर्षक शोध प्रबन्ध हेतु चयन किया गया है।

6. शोध रिक्तता

Research Gaps : -

भक्तिकाल तथा उसकी काव्यधाराओं का परिचय दिये जाने पर तथा लोकमंगल, जनवादी, सामाजिक चेतनावादी काव्य का नाम लिए जाने पर कबीर तथा तुलसी का नाम सर्वोपरि माना जाता हैं। कभी–कभी प्रमुख–प्रतिनिधि कवि का व्यक्तित्व इतना व्यापक, महान होता हैं कि उस कारण उसके पूर्व तथा परवर्ती कवियों का असाधारण व्यक्तित्व भी साधारणतयाः साधारण–सा प्रतीत होता हैं। इसी परिपाटी–वश सन्त काव्य के कवियों की असाधारण सामाजिक चेतना (जनमानस हृदय में मौजूद) धूमिल प्रायः हो चुकी है।

आधुनिक–वर्तमानकालीन पत्र–पत्रिकाओ, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं ने दादूदयाल, सुन्दरदास, नामदेव, रैदास, गुरूनानक जैसे सन्त महात्माओं के सामाजिक समरसता प्रयासों को उजागर करने का सराहनीय प्रयास अवश्य किया है। गरिमामयी व्यक्तित्व तथा काव्य उपरान्त भी, जनमानस–जनभाषा–जनकाव्य–जनकल्याणकारी साहित्य होनें के उपरान्त भी–उपस्थित शोध–रिक्तता की पूर्ति इस शोध प्रबन्ध दवारा करने का प्रयास अनिवार्य तथा अवश्यरूपेण रहेगा।

7. परिकल्पना

Major Hypothesis : -

' मध्यकालीन संतों के काव्यों में सामाजिक चेतना का अध्ययन (कबीर के पूर्ववर्ती एवं परवर्ती संतों के सन्दर्भ में)' विषय पर अनेक शोध कार्य हुए है किन्तु कबीर प्रथम एवं अंतिम रहें। कबीर की सामाजिक चेतना के कारण अन्य सन्त कवियों की सामाजिक चेतना को उचित सम्मान एवं महत्व प्राप्त नहीं हों पाया हैं। प्रमुख सन्त कवियों दवारा तद्युगीन वातावरण में सामाजिक परिवर्तन, समाज–कल्याण को वर्तमान तक उचितरूपेण स्थान नहीं मिल पाने के कारण प्रस्तुत विषय पर शोध प्रारूप प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तुत विषय पर परिकल्पना सम्भव न हो पाने के कारण परिकल्पना प्रस्तुत नही की जा रही है।

8. शोध–विधि

Research Methodology : -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रमुख आधारभूत ग्रन्थों को आधार–ग्रन्थ मानकर शोधकार्य किया जाएगाः–

1. **रविदास की बानी**, लेखक– रविदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।
2. **जपुजी**, लेखक– गुरू नानक देव, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।
3. **असादिवार**, लेखक गुरू नानक देव, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।
4. **रहिरास**, लेखक– गुरू नानक देव, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।
5. **सोहिला**, लेखक – गुरू नानक देव, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।
6. **बीजक**, लेखक– कबीर, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।
7. **अष्टपदी**, लेखक– हरिदास निरंजनी, प्रकाशक–नागरी प्रचारिणी सभा–काशी, उन्नीसवां संस्करण, 2038 वि.सं
8. **जोगग्रन्थ** लेखक– हरिदास निरंजनी, प्रकाशक–नागरी प्रचारिणी सभा–काशी, उन्नीसवां संस्करण, 2038 वि.सं
9. **हरडेवाणी, लेखक–** दादूदयाल, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।
10. **अंगवधू, लेखक–** दादूदयाल, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

11. **ज्ञानसमुन्द्र, लेखक–** सुन्दरदास, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

12. **सुन्दरविलास, लेखक–** सुन्दरदास, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

13. **सब्बंगी, लेखक–** रज्जब, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

14. **रज्जबबाणी, लेखक–** रज्जब, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

15. **ज्ञानबोध, लेखक–** मलूकदास, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

16. **रतनखान, लेखक–** मलूकदास, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

उपर्युक्त आधार ग्रन्थों का अनुशीलन, पाण्डुलिपियों का अध्ययन तथा विश्लेषण किया जायेगा। यथासम्भव दादूदयाल, सुन्दरदास, रज्जब, नामदेव, रैदास, आदि महान् व्यक्तित्वशाली सन्त कवियों की पावन जन्मभूमि तथा कर्म–स्थली की यात्रा द्वारा सामग्री एकत्रीकरण की जायेगी।

इस शोध कार्य में विवरणात्मक, वर्णनात्मक विशलेषणात्मक, तुलनात्मक एवं प्रभावात्मक शोध–विधियों द्वारा शोध–कार्य पूर्ण किया जाएगा।

8. प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की अध्याय योजना

(Tentative Chapter Scheme) :-

प्रथम अध्याय :– **भूमिका**

1. भक्ति : पौराणिक सन्दर्भ
2. भक्तिकालीन–भक्ति का उद्‌गम विकास
3. साहित्य तथा सन्त
4. भक्तिकालीन : प्रमुख व्यक्तित्व

द्वितीय अध्याय (अ) :– **कबीर के पूर्ववर्ती सन्तों का व्यक्तित्व और कृतित्व**

1. नामदेव
2. रैदास
3. अन्य सन्त कवि

(ब) :– **कबीर के परवर्ती सन्तों का व्यक्तित्व और कृतित्व**

1. दादूदयाल
2. सुन्दर दास
3. रज्जब दास
4. अन्य सन्त कवि

तृतीय अध्याय :– **मध्यकालीन युग की आवश्यकता**

1. भक्तिकालीन परिवेश
2. समाज सुधार : तद्‌युगीन युग की महती आवश्यकता
3. सन्तों द्वारा समाज का मार्ग दर्शन

चतुर्थ अध्याय :— **मध्यकालीन सन्तों की सामाजिक चेतना** 50 पेज

1. कुप्रथाओं पर प्रहार
2. समाज सुधार
3. मानव धर्म की स्थापना
4. हिन्दु मुस्लिम सौहार्द की स्थापना
5. जीवनमुल्यपरक काव्य रचना
6. दलित विमर्श
7. स्त्री विमर्श
8. निम्न से उच्च वर्ग पर प्रभाव

पंचम अध्याय :— **मध्यकालीन सन्तों की सामाजिक चेतना की विशिष्टता** 50 पेज

1. सत् काव्य
2. स्वअनुभूति एवं भावना प्रधान काव्य
3. लोक कल्याण की भावना
4. रहस्यवाद
5. आदर्श यथार्थ का अद्भुत संयोग
6. जनमानस–जनभाषा–जनकाव्य
7. कला से अधिक भाव पक्ष पर बल
8. कविता करना उद्देश्य नही

50 पेज

षष्टम् अध्याय :— **मध्यकालीन सन्तों की सामाजिक चेतना के बहुआयामी योगदान का विश्लेषण**

1. एक धर्म की स्थापना
2. धर्म–संस्कृति–समाज में समन्वय
3. नैतिकतावादी काव्य
4. युग आवश्यकतानुरूप काव्य निर्माण
5. परहित सुखाय को महत्व
6. मानवतावादी–प्रगतिवादी दृष्टिकोण की स्थापना
7. परवर्ती साहित्यकारों हेतु आदर्श काव्य
8. मध्यकालीन सन्तों का हिन्दी साहित्य में महत्व तथा योगदान

सप्तम् अध्याय :— **उपसंहार**

(भक्तिकाव्य का विश्लेषण 20 पेज

सामाजिक चेतना के सन्दर्भ में)

Total = 250-300 पेज

10. अध्ययन का सम्भावित योगदान

(Expected Contribution Form the Study) : -

प्रस्तुत शोध का संभावित योगदान इस प्रकार है :–

1. कबीर को छोड़कर अन्य सन्तों का महत्व बताना।
2. मध्यकालीन सांस्कृतिक परिवेश का अध्ययन।
3. भक्तिकालीन परिवेश का अध्ययन।
4. 'सन्त' शब्द की गरिमा बताना।
5. जीवन मूल्यों का महत्व बताना।
6. मध्यकालीन सन्त साहित्यकारों के समाज–कल्याण का परिचय देना।
7. आदर्श समाज की स्थापना का प्रयास।
8. हिन्दू मुस्लिम संस्कृति का समन्वय स्थापित करना।
9. जनमानस–जनभाषा – जनकाव्य।
10. कला से अधिक भाव को महत्व।
11. हिन्दू मुस्लिम सौहार्द की स्थापना।

11.1 शोध–कार्य का अनुमानित समय

(Expected Duration Of the work) :-

शोध–कार्य के पूर्ण होने में लगभग दो वर्ष का समय लगने का अनुमान है, जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

प्रथम वर्ष :– इस अवधि में शोध विषय से सम्बन्धित आधार ग्रन्थों एवं सहायक सन्दर्भ ग्रन्थों का संग्रहण एवं अध्ययन।

छः माह :– प्राप्त तथ्यों एवं विश्लेषण के आधार पर शोध प्रबन्ध का लेखन।

छः माह :– टंकण कार्य।

इस प्रकार विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय में प्रस्तावित शोध प्रबंध को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा।

11.2 शोध–कार्य हेतु उपलब्ध सुविधाएँ

(Facilities Availeble for the Research work) :-

शोध–कार्य हेतु राजकीय महाविद्यालय, अजमेर में निम्नलिखित सुविधाएँ उपलब्ध है:–

1. महाविद्यालय में एक समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें लगभग 9 हजार पुस्तकों का संग्रह है।
2. हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं की सन्दर्भ पुस्तकें, विभिन्न पत्र पत्रिकाएँ पुस्तकालय में उपलब्ध है।
3. शोध निर्देशक डॉ. हरप्रकाश गौड़ पूर्व में भी पीएच.डी. का अनुभव रखते है तथा उन्हें दीर्घकालीन अध्यापन का अनुभव प्राप्त है।
4. महाविद्यालय में हिन्दी विषय के आठ व्याख्याता कार्यरत है जिसमें सभी व्याख्याता पीएच.डी. उपाधि धारक हैं, जिन्हें दीर्घकालीन अध्यापन तथा पीएच. डी. का अनुभव प्राप्त है।
5. सभी व्याख्याता के सत्कर्ग तथा परामर्श के आधार पर कार्य।

12.1 आधार ग्रन्थ सूची :–

1 **रविदास की बानी,** लेखक– रविदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

2 **जपुजी,** लेखक– गुरू नानक देव, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

3. **असादिवार,** लेखक गुरू नानक देव, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

4 **रहिरास,** लेखक– गुरू नानक देव, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

5 **सोहिला,** लेखक – गुरू नानक देव, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

6. **बीजक,** लेखक– कबीर, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

7 **अष्टपदी,** लेखक– हरिदास निरंजनी, प्रकाशक–नागरी प्रचारिणी सभा–काशी, उन्नीसवां संस्करण, 2038 वि.सं

8 **जोगग्रन्थ** लेखक– हरिदास निरंजनी, प्रकाशक–नागरी प्रचारिणी सभा–काशी, उन्नीसवां संस्करण, 2038 वि.सं

9. **हरडेवाणी, लेखक–** दादूदयाल, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

10 **अंगवधू, लेखक–** दादूदयाल, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

11 **ज्ञानसमुन्द्र, लेखक–** सुन्दरदास, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

12. **सुन्दरविलास, लेखक–** सुन्दरदास, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

13. **सब्बंगी, लेखक–** रज्जब, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

14. **रज्जबबाणी, लेखक–** रज्जब, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

15 **ज्ञानबोध, लेखक–** मलूकदास, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

16 **रतनखान, लेखक–** मलूकदास, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणरी, द्वितीय संस्करण, वि. स. 2035।

17 **नामदेव की बाणी,** सम्पादक – श्यामसुन्दरदास, प्रकाशक – राजस्थानी ग्रंथाकार जोधपुर, प्रथम संस्करण, 1987 ई.।

18 **रविदास की बाणी,** सम्पादक – श्यामसुन्दरदास, प्रकाशक – राजस्थानी ग्रंथाकार जोधपुर, प्रथम संस्करण, 1987 ई.।

19 **दादूदयाल,** सम्पादक – परशुराम चतुर्वेदी प्रकाशक – राजस्थानी ग्रंथाकार जोधपुर, प्रथम संस्करण, 1985 ई.।

20 **कबीर ग्रन्थावली,** सम्पादक – श्यामसुन्दरदास प्रकाशक – हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण, 1980 ई.।